

महानिदेशक वाणिज्यिक लेखा-परीक्षा एवं पदेन सदस्य लेखा परीक्षा बोर्ड-1, कोलकाता की पत्रिका

अनुभूति

अंक-प्रथम



लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to truth in Public Interest

कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखा-परीक्षा
एवं पदेन सदस्य लेखा परीक्षा बोर्ड-1,
1, काउंसिल हाउस स्ट्रीट, कोलकाता-700 001



हिंदी पखवाड़ा-2018 का उद्घाटन समारोह





मुख्य संरक्षक

सुपर्णा देव, महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा
कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा एवं पदेन सदस्य लेखापरीक्षा बोर्ड-1

संरक्षक

तान्या सिंह, निदेशक/प्रशासन
कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा एवं पदेन सदस्य लेखापरीक्षा बोर्ड-1
अजय कुमार, उपनिदेशक/ रिपोर्ट
कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा एवं पदेन सदस्य लेखापरीक्षा बोर्ड-1

संपादक मंडल

सुशील तोपनो, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी, प्रशासन
नरेन्द्र कुमार, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी, प्रशासन
बबन कुमार, वरिष्ठ अनुवादक, प्रशासन
धीरज कुमार राय, कनिष्ठ अनुवादक, प्रशासन
राजीवदास, कनिष्ठ अनुवादक, प्रशासन

प्रकाशक

कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा एवं पदेन सदस्य लेखापरीक्षा बोर्ड-1
1, काउंसिल हाउस स्ट्रीट, कोलकाता-700 001

(पत्रिका में प्रकाशित रचनाएँ लेखकों के नीजी विचार हैं। प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है तथा रचनाओं के मौलिकता का दायित्व लेखकों की होगी)



संदेश

कार्यालय की वार्षिक हिंदी पत्रिका 'अनुभूति' के प्रथम अंक हेतु बहुत बधाई। हिंदी न सिर्फ हमारी राजभाषा है बल्कि करोड़ों लोगों की भावाभिव्यक्ति का माध्यम भी है। यह बहुजन की जन आकांक्षाओं का प्रतिनिधित्व करती है। कार्यालयीन कार्यों में हमने सदा ही इसको बढ़ावा देने का प्रयास किया है तथा इसके सरलतम रूप को अपनाकर दैनिक कार्यों में इसका अधिक से अधिक प्रयोग करने की कोशिश की जा रही है। इन्हीं प्रयासों का एक सम्यक स्वरूप इस कार्यालय की वार्षिक हिंदी पत्रिका 'अनुभूति' के प्रथम अंक के रूप में आप सबों के सम्मुख प्रस्तुत है। यह पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रति हमारी निष्ठा एवं समर्पण का प्रतिनिधित्व करने के साथ-साथ हमारे भावनाओं की अभिव्यक्ति का माध्यम भी बनेगी ऐसी हमारी आशा है। आप सभी के रचनात्मक सहयोग से प्राप्त प्रेरणा और प्रोत्साहन से पत्रिका का उत्तरोत्तर विकास की आशा है।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य हेतु अग्रिम शुभकामनाएँ।

सुपर्णा देब
महानिदेशक



संदेश

‘अनुभूति’ के प्रथम अंक के प्रकाशन के अवसर पर सभी को बधाई।

भारत विविधताओं का देश है। यह विविधता सांस्कृतिक धार्मिक भाषाई जैसे कई स्तरों पर स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है। लेकिन तमाम विविधताओं के बावजूद इस विशाल देश को एक सूत्र में बांधने वाले कई कारक हैं जिसने हमें आपस में जोड़े रखा है। एक भाषा के रूप में हिंदी की क्षमताओं से हम सभी परिचित हैं। हिंदी आम जन की भाषा है। वैश्विक स्तर पर भी इसने अपनी एक अलग पहचान स्थापित की है। जनसंपर्क के भाषा के रूप में इसकी बढ़ती स्वीकार्यता एवं अधिकाधिक प्रयोग एक शुभ संकेत है। एक कार्यालय के रूप में हमने निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए बढ़-चढ़कर कार्य किया है। कार्यालय के सभी कर्मियों की हिंदी के प्रति प्यार एवं लगाव को परिभाषित करने वाली एक पत्रिका की कमी थी जो अब पूरी हो गई है। उम्मीद है कि यह पत्रिका उनके आंतरिक अभिव्यक्ति तथा लेखा परीक्षा के अनुभवों को साझा करने हेतु एक माध्यम बनेगी।

पत्रिका को अधिक बेहतर बनाने हेतु आपकी प्रतिक्रियाएं एवं सहयोग अपेक्षित है जिससे **‘अनुभूति’** प्रगति के पथ पर गतिशील रहे।

तान्या सिंह
निदेशक/प्रशासन



संदेश

वार्षिक हिंदी पत्रिका 'अनुभूति' के प्रथम अंक के सफल प्रकाशन हेतु सभी को बधाई। साथ ही इसके अविरल प्रगति एवं विकास हेतु अग्रिम हार्दिक शुभकामनाएं। कार्यालय के दैनिक कार्यों से ईतर यह पत्रिका हम सबकी भावनाओं एवं अनुभूतियों को व्यक्त करने का माध्यम बनेगी। साथ ही अपने पाठकों को भी आनंदित एवं उद्वेलित करेंगी। यह पत्रिका कार्यालय के सभी कर्मियों के समग्र प्रयास का परिणाम है। सबों के सामूहिक प्रयास एवं योगदान के बिना इस लक्ष्य को प्राप्त करना मुश्किल होगा। भविष्य में भी आप सभी का सहयोग अनवरत प्राप्त होता रहेगा इसी आशा के साथ पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएं।

अजय कुमार
उपनिदेशक रिपोर्ट



संपादकीय

कार्यालय की वार्षिक हिंदी पत्रिका अनुभूति के प्रथम अंक के प्रकाशन पर मुझे अपार हर्ष की अनुभूति हो रही है। जीवन के विविध रंगों यथा कविता, गीत, व्यंग्य, जीवन दर्शन तथा समसामयिक विषयों को पत्रिका में सहेजने का सराहनीय प्रयास किया गया है। प्रत्येक व्यक्ति में विचारों का निरंतर संचार होता रहता है - केवल आवश्यकता है उन विचारों को गद्य एवं पद्य का आकार प्रदान करने की। हमारी कार्यालयीन पत्रिका 'अनुभूति' कर्मियों को यह मंच प्रदान करती है। 'अनुभूति' व्यक्तिगत अभिरुचि की अप्रतिम पत्रिका है।

हम सभी जानते हैं कि हिंदी हमारे देश की राजभाषा है। अतः सरकारी कर्मचारी होने के नाते हमारा यह कर्तव्य बनता है कि हम हिंदी सीखें और उसे अपने दिन-प्रतिदिन के कार्यालयीन कार्यों में उपयोग करें। विदित हो कि स्वभाषा के बिना स्वराज का बोध नहीं हो सकता। हिंदी नवजागरण के अग्रदूत भारतेन्दु जी ने भी कहा है कि

‘भाषा की उन्नति अहै सब उन्नति को मूल’

अतः हमें सशक्त राष्ट्र के निर्माण के लिए राजभाषा, जनभाषा, संपर्क भाषा व राष्ट्रभाषा के रूप में प्रतिष्ठित हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग करना चाहिए। यह हमारा संवैधानिक कर्तव्य भी है।

मुझे आशा ही नहीं बल्कि पूर्ण विश्वास है कि 'अनुभूति' का यह प्रथम अंक सृजनात्मकता की दृष्टि से अद्वितीय होने के साथ हिंदी के विकास एवं प्रचार-प्रसार की दिशा में प्रेरणादायी सिद्ध होगा। 'अनुभूति' पत्रिका का उद्देश्य अपने समय की चेतना के अनुरूप परिवर्तित हो रहे मूल्यों, प्रतिमानों को ध्यान में रखकर रचनाओं में नए भावबोध को विकसित करना है। विश्व बंधुत्व की भावना को विकसित करती यह पत्रिका पंत जी के कथनों को चरितार्थ भी करती है

‘सुंदर है बिहग सुमन सुंदर, मानव तुम सबसे सुंदरतम’

भारतीय अंतःकरण और मानस को समझने के लिए हिंदी की ज्योति प्रज्वलित करना ही पड़ेगा। अनुभूति की रचनाओं में हृदयस्पर्शी तन्मयता, उर्मिल लयात्मकता और प्रकृत प्रसन्नता का विपुल भाव है, यथा

‘नव रूप गंध रंग मधु मरंद नव आशा अभिलाषा अमंद नव गीतगूंज नव भावछंद।’

यह पत्रिका हिंदी को सशक्त, समृद्ध और बोधगम्य बनाने के हमारे प्रयासों को और आगे ले जाएगी। आपकी रचनात्मक प्रतिक्रिया एवं सुझाव पत्रिका को और बेहतर बनाने हेतु आवश्यक है।

आपके बहुमूल्य प्रतिक्रिया एवं सुझाव की प्रतिक्षा में.....

धीरज कुमार राय



अनुक्रमणिका

क्रम संख्या	रचना	लेखक	पृष्ठ संख्या
1	राजभाषा हिन्दी की विकास यात्रा	राजीव दास	07
2	भाषा लोगों को जोड़ती है, तोड़ती नहीं	तुलसी प्रसाद क्रॉच	09
3	परोपकार की भावना	नरेंद्र कुमार	10
4	भर्तृहरि की नीतिकथाएँ	संजय बोस	11
5	नारी	कमलेश कुमार	11
6	लड़की हूँ न	अभिषेक आनंद	12
7	औरत के स्वरूप	राम कुमार	13
8	बेटी का सपना	विमल कुमार	14
9	दे दो पंख सुनहरे दो	नुपूर साव	19
10	भाषा की मर्यादा और बाजार	धीरज कुमार	20
11	आंतरिक सौंदर्य	विमलेश कुमार	21
12	मैं किसान हूँ	राधेश्याम यादव	23
13	इंसान बनो	रोहित साव	24
14	जिंदगी	नुपूर साव	25
15	तीन ऋतुएँ	अनिल मांझी	26
16	कर्ज	जितेंद्र कुमार	27
17	आज के दौर में	धीरज कुमार	28
18	खामोशी	रोहित साव	29
19	यह चर्चा आम होने दो	अंकित कुमार मल्लिक	29
20	बहादुरशाह जफर का अंतिम सफर	नरेंद्र कुमार	30
21	धर्म बनाम वैज्ञानिक सोच	धीरज कुमार	32



राजभाषा हिन्दी की विकास यात्रा

राजीव दास

कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक/प्रशा.

किसी भी कार्य में सफलता पाने के लिए यदि पहले एक लक्ष्य निर्धारित करके योजनाबद्ध तरीके से कार्य किया जाये तथा साथ ही सही मार्गदर्शन एवं सहयोग भी मिले तो सफलता अवश्य ही मिलती है। राजभाषा हिन्दी के विकास एवं प्रचार-प्रसार के बारे में भी यही नीति बनानी होगी। भाषा मानव की सम्पत्ति है। मानव को यह उत्तराधिकार के रूप में प्राप्त हुई है। कहते हैं कि भाषा ज्ञान का द्वार होती है। भाषा चिंतन का साधन, विचारों का माध्यम तथा व्यवहारिक जरूरतों की पूर्ति का उपकरण होती है। भाषा ही एक सतत माध्यम है जिसके द्वारा हम मानवीय संवेदनाओं एवं भावनाओं से जुड़ते हैं।

स्वाधीनता के उपरान्त विदेशी शासन के बोझ को अपने से ऊपर उतार फेंकने के बाद यह प्रश्न उठा कि भारत की राजभाषा क्या हो? क्योंकि भारत वर्ष में करीब 1652 मातृ बोलियां बोली जाती हैं। अतः ये एक बड़ी समस्या उत्पन्न हुई कि अब स्वतंत्र भारत में शासकीय कामकाज किस भाषा या भाषाओं में किया जाए, तो संविधान सभा जिसका गठन देश विभाजन से पूर्व ही हो गया था उसके पास विभिन्न मत आए किन्तु बाद में सर्वसम्मति से 14 सितम्बर 1949 को 50 प्रतिशत लोगों की मातृभाषा व 80 प्रतिशत लोगों द्वारा बोली समझी जाने वाली भाषा 'हिन्दी' को ही 'राजभाषा' के मूल रूप में स्वीकार किया गया। संविधान सभा में राजभाषा संबंधी उपबंधों के विषय में चर्चा तो मुख्यतः 12,13,14 सितम्बर 1949 को ही शुरू हो चुकी थी।

वैसे भारत के संविधान का हिन्दी रूपान्तर का कार्य तभी शुरू हो गया था जब संविधान बनाने की कार्यवाही चल रही थी। संविधान के अध्यक्ष डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने इस कार्य के लिए हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं के विशेषज्ञ सदस्यों की एक समिति गठित की थी जिसने संविधान के अंग्रेजी प्रारूप का हिन्दी में अनुवाद किया। संविधान के हिन्दी अंग्रेजी दोनों ही भाषा के रूपान्तरों पर संविधान सभा के सदस्यों ने हस्ताक्षर किए तथा संविधान के अनुच्छेद 343 में यह घोषणा की गई कि संघ की राजभाषा हिन्दी व लिपि देवनागरी होगी तथा संघ के प्रशासनिक प्रयोजनों के लिए प्रयोग होने वाले अंकों का रूप भारतीय अंकों का अन्तर्राष्ट्रीय रूप होगा। साथ ही संविधान लागू होने के 15 वर्षों तक समानान्तर प्रयोग की वैधानिक मान्यता दी गयी एवं हिन्दी भाषा का विकास करके हिन्दी को ही राजकाज की भाषा स्थापित किया जायेगा।

हिन्दी को बढ़ावा देने की सारी शक्तियां राष्ट्रपति को दी गयी। इसी संदर्भ में राष्ट्रपति ने 1952, 1955, 1960 में हिन्दी के चरणबद्ध विकास के लिए अनेक आदेश जारी किए तथा इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु सलाह-मशवरों के लिए विद्वानों की कई समितियां भी गठित की गयी।

1960 के आसपास अहिन्दी भाषी राज्यों से विरोध की आवाज उठी। इसलिए 1963 में राजभाषा अधिनियम पारित किया गया कि जब तक हिन्दी अपना पूर्ण स्थान नहीं ग्रहण कर लेती तब तक अंग्रेजी भी प्रशासनिक कार्यों में यथावत कार्य करती रहेगी।

1965 में फिर भाषा विवाद उभरा इसके कारण सरकार को यह आश्वासन देना पड़ा कि जब तक देश के सभी राज्य हिन्दी को राजभाषा के रूप में अपनाने की स्वीकृति नहीं दे देते तब तक केन्द्र के साथ पत्र व्यवहार अंग्रेजी में किया जा सकता है। इन सब बातों को ध्यान में रखकर अधिनियम 1963 में संशोधन करके संसद के दोनों सदनों द्वारा 1967 में ही एक 'राजभाषा संकल्प' सर्वसम्मति से पारित किया गया जिसके अनुसार संघ की राजभाषा हिन्दी का प्रचार प्रसार किया जाए।

राजभाषा नियम 1976 भी इसी उद्देश्य पूर्ति हेतु बनाये गया। राजभाषा नियम बनाने की शक्ति राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 8 में निहित थी। राजभाषा नीति के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए देश को तीन क्षेत्रों 'क', 'ख' तथा 'ग' में बांटा गया व तीनों क्षेत्रों के स्थितियों की भिन्नता के अनुसार हिन्दी में कामकाज के अलग-अलग लक्ष्य रखे गये। हिन्दी में प्राप्त पत्रादि का जवाब हिन्दी में ही दिए जाने का प्रावधान रखा गया। हिन्दी में प्रवीणता और कार्य साधक ज्ञान के मापदंड तय किए



गए। हिन्दी के उत्तरोत्तर प्रयोग में गति लाने के लिए प्रत्येक वर्ष गहन और विस्तृत कार्यक्रम तैयार करके कार्यान्वयन करने का दायित्व केन्द्र सरकार को सौंपा गया। इस अनुपालन में गृह मंत्रालय के 'राजभाषा विभाग' द्वारा हर वर्ष एक वार्षिक कार्यक्रम तैयार किया जाता है जिसमें केन्द्र सरकार के सभी कार्यालयों में पूरे एक वर्ष में हिन्दी के कामकाज में प्रगति लाने के लिए लक्ष्य निर्धारित किए जाते हैं। इस प्रकार वैधानिक प्रावधानों से हिन्दी के प्रति बढ़ती अरुचि तथा कुछ हद तक अनभिज्ञता स्तर में कमी को रोकने में सहायता तो अवश्य ही मिलती है और जहां सरकारी दायरे में कामकाज हो रहा है वहां हिन्दी का प्रयोग भी बढ़ रहा है। यह तो सर्व विदित है कि हिन्दी भाषा न केवल देश की सर्वश्रेष्ठ भाषा है अपितु यही एक अकेली ऐसी भाषा है जिसको देश का सर्वाधिक वर्ग बोलता व समझता है। विश्व में अंग्रेजी व चीनी के बाद सर्वाधिक लोगों द्वारा बोले जाने वाली तीसरी भाषा हिन्दी है। हिन्दी वह भाषा है जो भारत की सभी भाषाओं के मध्य सेतु का कार्य करती है।

वर्तमान में हिन्दी – राजभाषा का दर्जा पाने के लिए राष्ट्रभाषा हिन्दी को 26 जनवरी 1950 ई. (भारतीय संविधान की स्वीकृति) तक अवश्य प्रतीक्षा करनी पड़ी।

संवैधानिक स्थिति- 15 अगस्त 1947 ई. को स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद 26 जनवरी 1950 को भारत वर्ष में जो नया संविधान अस्तित्व में आया उसके अनुसार धारा 343(1) में संघ की सरकारी भाषा देव नागरी लिपि को तीन स्तरों पर राजभाषा स्वीकार किया गया।

1. देव नागरी में लिखित हिन्दी भारतीय संघ की राजभाषा है अर्थात् हिन्दी को केन्द्रीय राजभाषा का दर्जा दिया गया।
2. हिन्दी विभिन्न प्रदेशों की प्रादेशिक भाषा है जैसे उत्तर प्रदेश उत्तरांचल, हिमाचलप्रदेश, मध्यप्रदेश, राजस्थान, हरियाणा, दिल्ली आदि। इन राज्यों ने प्रशासनिक कार्य हिन्दी में करने की घोषणा की।
3. पंजाब, महाराष्ट्र, गुजरात प्रान्तों ने अपनी प्रादेशिक भाषा के साथ अर्थात् सहभाषा के रूप में प्रयोग करने की घोषणा की।

14 सितम्बर 1949 को संविधान सभा ने हिन्दी को भारतीय संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया। इसलिए तब से 14 सितम्बर को हिन्दी दिवस मनाया जाता है।

अनुच्छेद (345) में राज्य की भाषाएं व 346 में राज्य एवं संघ के बीच पत्राचार की भाषा, 347 के उपबंध में उल्लिखित है जब तक राज्य का विधान मंडल विधि द्वारा (कानूनी) हिन्दी को अंगीकार न कर ले तब तक राजकीय प्रयोजनों के लिए अंग्रेजी भाषाओं का प्रयोग किया जा सकेगा।

अनुच्छेद (348) उच्चतम न्यायालय, संसद या राज्य विधान मंडल द्वारा निकाले गए अध्यादेश या विधियक का प्राधिकृत पाठ अंग्रेजी भाषा में होगा।

अनुच्छेद (349) भाषा संबंधी की कुछ विधियों को अधिनियमित करने की विशेष प्रक्रिया का उल्लेख है।

अनुच्छेद (350) व्यथा के निवारण के लिए अभ्यावेदन में प्रयोग की जानी वाली भाषा का रूप संघ या राज्य में प्रयोग होने वाली भाषा होगी।

अनुच्छेद (351) हिन्दी भाषा चहुँमुखी विकास तथा प्रचार-प्रसार का कानूनी दायित्व केन्द्र सरकार को सौंपा गया है। इसके दिशानिर्देश भी अनुच्छेद (351) में दिया गया है।

राजभाषा अधिनियम 1963 दक्षिण में भाषा विरोध के कारण यह नियम पारित किया गया। इसमें केवल 9 उपबंध है। 1967 में इस अधिनियम में संशोधन करके यह प्रावधान किया गया कि संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए और संसद में अंग्रेजी का प्रयोग बना रहेगा। राज्यों द्वारा हिन्दी के पत्र-पत्रादि के साथ-साथ अंग्रेजी अनुवाद भी भेजा जाएगा।

राजभाषा नियम 1976 – 25 जून, 1975 को गृह मंत्रालय के अधीन 'राजभाषा विभाग' की स्थापना की गई और राजभाषा अधिनियम 1963 व 1967 के प्रावधानों को व्यवहारिक रूप प्रदान करने के लिए अधिनियम 1963 की धारा (8) के अर्न्तगत राजभाषा नियम 1967 पारित किया गया।

त्रिभाषा सूत्र – बहुभाषी स्वतंत्र भारत में देश की भाषा के राजनीतिक समाधान के लिए 1956 ई. में 'केन्द्रीय शिक्षा सलाहकार बोर्ड' ने त्रिभाषा सूत्र की सिफारिश की जिसमें हिन्दी-अंग्रेजी के साथ मातृभाषा या क्षेत्रीय भाषा का प्रयोग किया जा सकेगा।



भाषा लोगों को जोड़ती है, तोड़ती नहीं

तुलसी प्रसाद क्रॉच

लेखा परीक्षक
डीवीसी मुख्यालय

भाषा वह माध्यम है जिससे हम आसानी से दुनिया के किसी भी कोने में बैठे व्यक्ति से संपर्क स्थापित कर सकते हैं, तथा अपनी भावना एवं बातों को दूसरे तक पहुंचा सकते हैं। एक ऐसी स्थिति जहां दो लोग एक दूसरे को की भाषा नहीं समझते वहां संवाद के लिए एक ऐसी भाषा की जरूरत पड़ती है जिसे दोनों व्यक्ति आसानी से समझते हो। यदि यह भी संभव नहीं हो तो एक ऐसे व्यक्ति की आवश्यकता पड़ती है जो दोनों ही लोगों की भाषा समझता हो और एक व्यक्ति द्वारा बोले गए संवाद को दूसरे व्यक्ति को उसकी ही भाषा में समझा देता है। इसका तात्पर्य है कि एक अतिरिक्त संपर्क भाषा का ज्ञान या एक से अधिक भाषा को जानने वाले व्यक्ति हमेशा विभिन्न समुदाय प्रांत देश के लोगों को आपस में संवाद या संपर्क स्थापित करने में सहयोग ही करते हैं।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि भाषा की मदद से पहले संवाद या संपर्क स्थापित होते हैं उसके बाद संबंध परस्पर विश्वास एवं भाईचारे का विस्तार होता है।

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि भाषा का कार्य कहीं भी लोगों को तोड़ने का नहीं बल्कि लोगों को एक दूसरे से जोड़ने का तथा परस्पर आपसी संबंधों को मजबूती प्रदान करने के लिए होता है। हम सभी अलग-अलग भाषा भाषी के लोग अपनी अपनी भाषा के माध्यम से अपनी सोच, भावना, संस्कृति साहित्य तथा गीत को एक दूसरे तक आसानी से पहुंचा पाते हैं।

जैसा कि हम सभी जानते हैं कि भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 के अनुसार हिंदी भाषा को भारत का आधिकारिक भाषा घोषित किया गया है, तथा इसके प्रचार-प्रसार की जिम्मेदारी केंद्र सरकार को दी गई है। समय-समय पर केंद्र सरकार इसके लिए प्रयास भी करती रही है और ऐसा करना अतिआवश्यक भी है क्योंकि भारत जैसे विविधताओं भरे देश में जहां अनेक भाषाएं हैं आपस में संवाद स्थापित करने के लिए एक समान संपर्क भाषा का होना आवश्यक है, क्योंकि एक समान संपर्क भाषा ना केवल देश के नागरिकों को आपस में जोड़ती है बल्कि राष्ट्रीय एकता एवं आपसी भाईचारे को मजबूत भी करती है।

परंतु संविधान के लागू होने के बाद के वर्षों से ही ऐसा देखा गया है कि कुछ नकारात्मक सोच वाले लोग हिंदी के विकास एवं प्रचार-प्रसार को एक भाषा के रूप में दूसरे भाषा भाषी के लोगों पर जबरन थोपना समझते हैं। ऐसे लोग विभिन्न भाषा भाषी के लोगों को भड़काते रहते हैं कि आप सब एक जनसंपर्क की भाषा के रूप में हिंदी को बढ़ावा देने का विरोध करें। ऐसी भावना लोगों के बीच आपसी संवाद विकसित करने में बाधक है, साथ ही राष्ट्र के एकता और आपसी भाईचारे को भी कमजोर करती है। यह देश के हित में नहीं है तथा बिल्कुल ही गलत भावना है जिसका मजबूती से विरोध होना चाहिए।

मेरा यह मानना है कि भारत के सभी भाषाओं का विकास समान रूप से किया जाना चाहिए। इससे लोगों के बीच जनसंवाद और मजबूत होती है तथा राष्ट्रीय एकता और मजबूत होता है। एक जन संपर्क भाषा के रूप में हिंदी को विकसित करने के लिए केंद्र सरकार को इसे पाठ्यक्रम में प्राथमिक शिक्षा के स्तर पर देश के सभी हिस्सों में सम्मिलित करवाना चाहिए, जहां इसका अध्ययन स्वेच्छिक रखना चाहिए तथा इससे संबंधित परीक्षा में उत्तीर्ण होना अनिवार्य नहीं होना चाहिए। साथ ही ऐसा करने पर शिक्षकों पर आने वाले पूरे खर्च का वहन केंद्र सरकार को करना चाहिए। ऐसे छात्र जो गैर हिंदी भाषी हैं तथा हिंदी का अध्ययन करते हैं साथ ही माध्यमिक स्तर, उच्च माध्यमिक स्तर पर हिंदी भाषा की परीक्षा में प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान प्राप्त करते हैं उनके पुरस्कार राशि केंद्र सरकार द्वारा दी जानी चाहिए ताकि हिंदी भाषा में रुचि रखने वाले विद्यार्थी आसानी से हिंदी सीख सकें तथा और अधिक छात्र हिंदी अध्ययन के लिए प्रोत्साहित हो सकें। इस प्रकार हिंदी का आसानी से विकास संभव है। हिंदी देश के नागरिकों को आपस में जोड़ राष्ट्र एकता एवं आपसी भाईचारे को मजबूत करेंगी। यह विश्व पटल पर भारत की एक अलग राष्ट्रीय पहचान भी बनाएगी। जय हिंद जय हिंदी।



परोपकार की भावना

नरेंद्र कुमार

सहायक लेखा परीक्षा अधिकारी, प्रशासन

एक बार श्रीकृष्ण भगवान और अर्जुन भ्रमण पर निकले तो उन्होंने मार्ग में एक निर्धन ब्राह्मण को भिक्षा मांगते देखा। अर्जुन को उस निर्धन ब्राह्मण पर दया आ गयी और उन्होंने उस ब्राह्मण को स्वर्ण मुद्राओं से भरी एक पोटली दे दी। इस पोटली को पाकर वह ब्राह्मण प्रसन्नतापूर्वक अपने सुखद भविष्य के सुंदर-सुंदर स्वप्न देखता हुआ अपने घर लौटने के लिए चल पड़ा। परंतु यह उसका दुर्भाग्य था कि मार्ग में एक लुटेरे ने उससे वह पोटली छीन ली। ब्राह्मण इस बात से दुखी होकर फिर से भिक्षावृत्ति में लग गया।

अगले दिन अर्जुन की नजर जब उस ब्राह्मण पर पड़ी तो उन्होंने उससे इसका कारण पूछा। ब्राह्मण ने सारी घटना का वृत्तांत सुना दिया जिसे सुनकर अर्जुन को ब्राह्मण की व्यथा पर पुनः दया आ गयी। अर्जुन ने इस बार ब्राह्मण को अधिक मूल्यवान एक मणिक दिया। ब्राह्मण उस मणिक को लेकर घर पहुंचा। उस समय ब्राह्मण की स्त्री घर में नहीं थी। ब्राह्मण के घर में बहुत पुराना एक घड़ा पड़ा हुआ था। ब्राह्मण ने चोरी होने के भय से मणिक को उस घड़े में छुपा दिया। दिन भर थका-मांदा होने के वजह से घोर निद्रा आ गयी। इसी बीच ब्राह्मण की स्त्री ने उसी पुराने घड़े को हाथ में ले लिया तथा नदी में पानी लेने के लिए चल पड़ी। दुर्भाग्य इस बार भी प्रबल था। जैसे ही उसने घड़े को नदी में डुबाया, वह मणिक भी जल के साथ नदी की धारा में बह गया। ब्राह्मण को जब यह बात पता चला तो वह अपने भाग्य को कोसता हुआ पुनः भिक्षावृत्ति में लग गया।

अर्जुन और श्रीकृष्ण अगले दिन जब पुनः भ्रमण के लिए निकले तो देखा कि ब्राह्मण पुनः भिक्षावृत्ति में लगा हुआ है। अर्जुन को ब्राह्मण पर गुस्सा आया परंतु अपने आप को संतुलित किया। अर्जुन और भगवान श्रीकृष्ण समीप जाकर गरीब ब्राह्मण का हाल-चाल पुछा। ब्राह्मण ने वृत्तांत सुनाया, जिसे सुनकर अर्जुन को बड़ी हताशा हुई तथा उन्होंने सोचा कि अब इस ब्राह्मण के जीवन में कभी भी सुख नहीं आ सकता। भगवान श्रीकृष्ण अर्जुन के मन का भाव समझ गये। उन्होंने ब्राह्मण को दो पैसे दान में दे दिये तथा आगे बढ़ चले।

अर्जुन से रहा न गया तथा वह बोला, प्रभु मेरे द्वारा दी गयी ढेर सारी मुद्राएं और मणिक भी इस अभागे की दरिद्रता नहीं मिटा सके तो इन दो पैसों से क्या होगा? यह सुनकर भगवान श्रीकृष्ण सिर्फ मुस्कराए और अर्जुन को उस ब्राह्मण के पीछे जाने को कहा। अर्जुन ब्राह्मण के पीछे-पीछे चल दिए।

रास्ते में ब्राह्मण सोचते हुए जा रहा था कि न जाने भगवान ने दो पैसों का दान क्यों दिया। इससे तो किसी एक का भी भोजन नहीं आ पाएगा। ऐसा सोच ही रहा था कि उसकी नजर एक मछुआरे पर पड़ी। उसने देखा कि उसके जाल में एक छोटी-सी मछली पड़ी है जो छूटने के लिए तड़प रही है। ब्राह्मण को उस मछली पर दया आ गयी। उसने सोचा इन दो पैसों से पेट की आग तो बुझेगी नहीं, क्यों न इन पैसों से उस छोटी मछली के प्राण बचा लिया जाए। यह सोचकर दो पैसों में मछली का सौदा कर के अपने कमंडल में मछली को डाल दिया। उसमें हल्का जल भरा और चल दिया। कुछ देर पश्चात् मछली के मुख से कुछ निकला। उस निर्धन ब्राह्मण ने गौर से देखा, वह मणिक था, जो उसने घड़ में छिपाया था। ब्राह्मण प्रसन्नतापूर्वक जोर से चिल्ला उठा- मिल गया, मिल गया।

ठीक उसी वक्त वह लुटेरा भी सामने से गुजर रहा था। लुटेरा डर गया कि ब्राह्मण ने उसे पहचान लिया है। अगर राजदरबार में शिकायत कर देगा तो उसे आजीवन कारावास में गुजारना पड़ेगा। अतः वह डरकर ब्राह्मण के पैरों में गिरकर गिड़गिड़ाने लगा तथा क्षमा मांगते हुए लूटी हुए सारी स्वर्ण मुद्राएं लौटा दी।

इस घटना को देखते हुए अर्जुन श्रीकृष्ण भगवान के सामने नतमस्तक हुए और कहा कि प्रभु जो काम मेरे मूल्यवान स्वर्ण मुद्राएं और मणिक ने नहीं कर पाए, वह आपके दो पैसों ने कर दिखाया। यह कैसे हुआ?

श्रीकृष्ण भगवान ने कहा कि अर्जुन, यह अपनी-अपनी सोच का अंतर है। जब तुमने उस निर्धन को थैली भर स्वर्ण मुद्राएं और मणिक दिया, तब उसने मात्र अपने सुख के विषय में सोचा। किंतु जब मैंने उसको दो पैसों को दिया तब उसने दुसरे के दुःख के विषय में सोचा।

इसलिए हे, अर्जुन यह सत्य है कि जब आप दुसरो के दुःख के बारे में सोचते हैं तथा आपके मन में परोपकार की भावना होती है और दुसरो का भला कर रहे होते हैं तब आप ईश्वर का कार्य कर रहे होते हैं और तब ईश्वर आपके साथ होकर आपका भला कर देते हैं। इस ब्राह्मण के साथ भी यही हुआ।



भर्तृहरि की नीतिकथाएँ

संजय बोस

वरिष्ठ लेखा परीक्षक
रिपोर्ट अनुभाग

भर्तृहरि एक महान संस्कृत कवि थे। संस्कृत साहित्य के इतिहास में भर्तृहरि एक नीतिकार के रूप में प्रसिद्ध हैं। इन्होंने सुंदर और आसान भाषा में नीति, वैराग्य तथा श्रृंगार जैसे गुढ़ विषयों पर शतक काव्य लिखे हैं। इनके कुछ नीतिकथा आप लोगों के लिए प्रस्तुत हैं जिसका अनुसरण करने से हमारा जीवन सुखमय बन सकता है -

- यदि लोभ है तो और अवगुणों की क्या आवश्यकता है ?
- यदि चुगल खोरी है तो और पापों की क्या आवश्यकता है ?
- यदि सत्य है तो तपस्या की क्या आवश्यकता है ?
- यदि मन शुद्ध है तो तीर्थों की क्या आवश्यकता है ?
- यदि सज्जनता है तो और गुणों की क्या आवश्यकता है ?
- यदि यश है तो आभूषणों की क्या आवश्यकता है ?
- यदि उत्तम विद्या है तो धन की क्या आवश्यकता है ?
- यदि अपराध है तो मृत्यु की क्या आवश्यकता है ?

नारी



कमलेश कुमार

वरिष्ठ लेखा परीक्षक



तुम चहकती रहो,
तुम महकती रहो।
तुम प्रेरणा बनकर चमकती रहो।
कभी बेटी बनकर, कभी बहन बनकर,
कभी प्रेमिका बनकर, कभी पत्नी बनकर,
खुशियों की बारिश करती रहो।
जीवन के इस लंबे सफर में
मां बन कर मार्गदर्शन करती रहो।



लड़की हूँ न

अभिषेक आनंद

डॉटा एंट्री ऑपरेटर

प्रशासन अनुभाग

प्रिया के बच्चे स्कूल जा चुके हैं और पति दफ्तर। वह अपने घरेलू कार्यों को करके खिड़की के किनारे बैठती है, तो उसकी नजर कॉलेज जा रहे लड़कियों के एक समूह पर पड़ती है। उन्हें देखते ही वह अपने अतीत में वापस आ जाती है।

उसका परिवार एक समृद्ध परिवार था, इसलिए उसके पिताजी ने उसकी शिक्षा अच्छी तरह से करवाई। उसने 12 वीं तक की पढ़ाई अपने शहर के अच्छे संस्थानों में की। उसके बाद पी.जी तक की पढ़ाई दिल्ली विश्वविद्यालय से की। यहां तक उसकी जिंदगी में उसे कभी महसूस नहीं हुआ कि वह लड़की है या उसके परिवार वालों ने लड़के लड़की में भेद किया है।

परंतु डॉक्टरों की पढ़ाई शुरू करते ही उसे सब कुछ अलग महसूस होने लगा। परिवार वालों ने उस पर शादी का दबाव बनाना शुरू कर दिया जबकि वह अपने सपनों को साकार करने की शुरुआत कर दी थी। वह खुद पहले अपने पैरों पर खड़ा होना चाहती थी। वह अपनी जिंदगी को अपने नजरिए से जीना चाहती थी। परंतु परिवार वालों ने उस पर शादी का दबाव बनाना शुरू कर दिया। जिससे वह परेशान होने लगी। वह सोचने लगी कि जब उसने इतनी अच्छी पढ़ाई की और जब वह अपने सपनों को जीना शुरू ही किया है तब परिवार वाले उसे वह जिम्मेदारी सौंपना चाहते हैं जिसके लिए वह तैयार नहीं है। वह चाहकर भी अपने परिवार वालों को समझा नहीं पा रही है।

जब वह अपने आसपास के घरों में देखती थी कि पढ़ाई की उम्र में लड़कियों की शादी हो रही है तो वह उन्हें समझाती, उनका विरोध करती। तब उसके परिवार वाले उसका साथ देते थे। और आज वही लोग कुछ भी समझने को तैयार नहीं हैं। जब प्रिया अपनी पढ़ाई के लिए घर से दूर दिल्ली जा रही थी तो वह और उसके घर वाले एक आदर्श प्रस्तुत कर रहे थे कि लड़कों और लड़कियों में कोई अंतर नहीं है। परंतु आज वही लोग उसे अपने सपने को साकार करने में रोक लगाकर उसे जबरदस्ती सांसारिक जीवन जीने के लिए मजबूर कर रहे हैं। वह स्वयं इन सवालों का जवाब ढूंढती और अकेले ही उन सब का विरोध करती। उसकी मां, बहन, भाई कोई उसके साथ खड़ा नहीं हो रहा था। वह खुद को असहाय और अकेला महसूस कर रही थी, क्योंकि उसकी लड़ाई सिर्फ अपने परिवार वालों से ही नहीं बल्कि एक विचारधारा से थी।

अगली बार जब वह अपनी छुट्टी बिताने घर आई तो देखा घर का माहौल बदला हुआ है। उसे पता चला कि उसे लड़के वाले देखने आ रहे हैं। जिस घर में कुछ भी करने से पहले पूछा जाता था उसी घर में उसकी जिंदगी का सबसे महत्वपूर्ण फैसला उसकी मर्जी के बिना लिया जा रहा था। उसके पिताजी ने उसकी सगाई का तारीख तय कर अपना फैसला सुना दिया था।

उसकी शादी उससे 15 वर्ष बड़े बैंक के अच्छे पद पर कार्यरत व्यक्ति से तय कर दी गई थी। उसे स्वीकार नहीं था। वह आने वाले समस्याओं के बारे में सोचती, सबको बताती पर कोई उसकी नहीं सुनता। वह डर रही थी, क्योंकि उसे जिंदगी की शुरुआत उस व्यक्ति के साथ करनी थी जो उस से उम्र में काफी बड़ा था। उसका होने वाला पति क्या उसकी भावनाओं को समझेगा? क्या उसके सपने साकार करने देगा? जब वह इन बातों को सामने रखती तो उस पर कटाक्ष किया जाता, उसे ताने सुनने को मिलते हैं-लड़कियों को ज्यादा पढ़ाना नहीं चाहिए एक उम्र तक उनकी शादी कर देनी चाहिए। ऐसे तीक्ष्ण शब्द उसके हृदय को छलनी कर देते और वह हताश हो जाती। उसे परिवार की इज्जत मान मर्यादा का हवाला दिया जाता है।

इतने में उसकी मित्र उससे मिलने आती है। जब वह सब कुछ बताती है तो वह प्रिया को बोलती है-यह हम लड़कियों के लिए आम बात है। घरवाले जो भी फैसला करते हैं, चाहे वह हमारे लिए सही हो या गलत हमें उसे मानना ही पड़ता है क्योंकि हम लोग लड़की हैं न! तभी दरवाजे की घंटी बजती है और वह अपने पुरानी यादों से बाहर आती है। वह वही तीन शब्द 'लड़की हूँ न' के बारे में सोचते हुए दरवाजा खोलने के लिए चल देती है।



औरत के स्वरूप

राम कुमार

वरिष्ठ लेखा परिक्षक
दामोदर घाटी निगम सी टी पी एस

वह जब बेटी होती है,
नन्हे कदम, प्यारा मुखरा,
कर लाख शैतानियाँ, तब पर भी
अपने पापा की चहेती होती है,
वह जब बेटी होती है।
उसे दुलारना, पुचकारना,
मासूम से चेहरे को देखकर यह सोचना,
कैसा होगा जीवन, जब वह छोड़ चली जाएगी।
सच में वो घर की सारी खुशियाँ खुद में समेटती होती है।
जब वह बेटी होती है।

जब वह बहन होती है,
हर बात पर लड़ाई, उसे चिढ़ाना, फिर मनाना।
उसके हिस्से की चीज छिनना,
लेकिन उसे एक पल भी खुद से
ओझल देख यह मालूम होता है।
परिवार के खूबसूरत चेहरे की दो नयन होती है,
जब वह बहन होती है।
उसे खुद से ज्यादा पाते हुए देख मेरी चिढ़,
मेरी शैतानियों के बाद भी मेरे लिए उसकी फिक्र,
कैसा होगा जीवन जब वह छोड़ चली जाएगी!
होगा घर बिखरा बाग, उसके होने से यह चमन होती है,
जब वह बहन होती है।

जब वह पत्नी होती है,
फुल सी पली हुई, फिर अचानक परिवार की जिम्मेवारी,
जो कल तक थी नादान, आज सीख चुकी है दुनियादारी,
सभी रिश्तों को खुश करने के लिए खुद को खुशी छोड़ चुकी
वह सच में संगिनी होती है।
जब वह पत्नी होती है।
जो कल तक सहमी रहती थी, आज अपने बच्चों के लिए खड़ी
वह दहकती अग्नि होती है।
जब वह पत्नी होती है।

जब वह माँ होती है,
हमारी जिद पर जब सभी खिलाफ होते हैं,
एक इनकी दबी सी हाँ होती है,
जब वह माँ होती है।
उसके सीने से लग कर पले हैं,
उसके सीने अजीब सी छाँव होती है,
जब वह माँ होती है।

बचपन से लेकर उम्र भर हमारे फिक्र में जी रही
इस कठिन जीवन के दुपहरी में वह ठंडी शाम होती है,
जब वह माँ होती है।
माँ शब्द की व्याख्या कर सके,
वह शब्द ही कहाँ होती है,
माँ तो सच में सिर्फ माँ होती है।





बेटी का सपना

विमल कुमार

डटा एंट्री ऑपरेटर
आर.ए.ओ./दा.घा.नि

“बेटी कहती है”
मैं भी पढ़ने जाऊँगी
क, का, कि, की, अ, आ, इ, ई
ऊँचे स्वर में गाऊँगी।

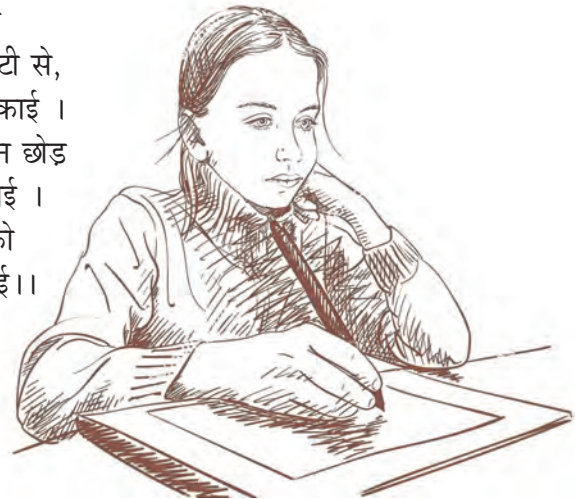
मैं भी पढ़ने जाऊँगी
कब तक अनपढ़ बैठी,
मैं डंगर - ढोर चराऊँगी?
क्या चौका बर्तन करते-करते
मैं अनपढ़ ही रह जाऊँगी।।

“बेटी की गुजारिश पर माँ कहती है”
बेटी तु तो है बहुत ही भोली
निर्धन की खाली है झोली,
भईया तो वंश चलाएगा,
तेरा सिर ढकने आएगा।
उससे तो मत तु तुलना कर
जा शांत बैठकर धीरज धर
मैं तुझको समझाऊँगी
तु ना पढ़ने जाएगी ।।

पापा ने जब यह सब सुना,
बेटी की सिर पर हाथ धरा।।
बोले बेटी तु है धन्य - धन्य
तेरे संग आशीर्वाद मेरा सदा।।
बेटी अब तु भी पढ़ने जाएगी।।
अपनी आशा अभिलाषा को
पूरा कर पायेगी।।
हाँ तु भी पढ़ने जाएगी।।

“माँ को अपनी गलती का एहसास हुआ और बोली”
तुझमें, भईया में भेद नहीं,
दोनों ने तो लिया है जन्म यही ।।
फिर तू क्यो ना पढ़ पाएगी
बेटी तू भी पढ़ने जाएगी ।।
तेरे पढ़ने से ही तो अब,
घर में शिक्षा आएगी
आने वाली पीढ़ी भी
तुमसे संबल पाएगी ।।
“बेटी को जब लगता है कि वह भी पढ़ने जा सकती है तो खुश हो कहती है”

मैंने एक सपना देखा है
वह पूरा करना चाहूँगी।
जब माँ थक कर बैठी होगी,
मैं डॉक्टर बनकर आऊँगी।
“बेटी की पढ़ाई को लेकर
अब घर में खुशी की लहर आई।”
सुनकर बेटी का ये सपना,
घर में खुशियाँ छाई
पापा भी सहमत बेटी से,
ये देख माँ मंद मुस्काई ।
सब भेदभाव अज्ञान छोड़
अब होने लगी पढ़ाई ।
माँ ने प्यारी बेटी को
खुशी से गले लगाई।।





कार्यालय में आयोजित चिकित्सा शिविर दिनांक 27.05.2019





कार्यालय में आयोजित योग दिवस दिनांक 21.06.2019





कार्यालय में आयोजित हिंदी कार्यशाला



कार्यालय में आयोजित चिकित्सा शिविर दिनांक 27.05.2019





कार्यालय में आयोजित हिंदी कार्यशाला





दे दो पंख सुनहरे दो

नूपुर साव
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक
प्रशासन अनुभाग

दे दो पंख सुनहरे दो
मेरे इन नन्हे सपनों को
जो जाग रहे नींद भरी आंखों में मेरे
रात दोपहरी सांझ सवेरे
उम्मीदों से मुझको घेरे
कहीं लड़खड़ाए तो मन विचलित न हो
दे दो पंख सुनहरे दो।

वो चंद्रमा की ओर है ताकता
मन जाने कितनी दिशा भटकता
आशाओं की ज्योति को जलाए रखा है
इस ज्योति को बुझने ना दो
दे दो पंख सुनहरे दो।

विपत्ति की लहरें ऊंची होती है
राह भटकाने में इनकी रूचि होती है
कहीं टूट बिखर वो जाए न
थक कर चूर यही सो जाए न
निकला है मंजिल की तलाश पर
खुद भटक कहीं खो जाए न।

अब रोक कर इन ऊंची लहरों को
सब राहों को खोल दो
खुले गगन में उड़ने को
दे दो पंख सुनहरे दो।



भाषा की मर्यादा और बाजार

धीरज कुमार राय

कनिष्ठ अनुवादक, प्रशा.

जिस समय में हम जी रहे हैं वह विश्व बाजारवाद का दौर है। हम आधुनिकता के अंत और उत्तर आधुनिकता की ओर अग्रसर ऐसे दौर में हैं, जिसमें समय मनुष्य का ना होकर मशीन का है, उपकरण का है और नई-नई अवधारणाओं का है। हम सूचना के विस्फोट के ऐसे समय में हैं जहाँ प्रचार के बड़े माध्यमों पर भाषा का दबदबा है। भाषा कलात्मकता के साथ बनाई जा रही है। बाजार की सुविधा के लिए गढ़े जाने वाले शब्द जन्म ले रहे हैं। टेलीविजन पर उपभोक्ता सामग्री के विज्ञापनों में हम इस स्थितिकरण को देख रहे हैं। इस भाषा के अशुद्धि या खिचड़ी में वंचित जनता की मार्मिक स्थितियों की छवि नहीं दिखाई पड़ती।

आज साहित्य किताबों से निकलकर कंप्यूटर संजाल के पर्दे पर शहरी और अर्ध शहरी पाठकों द्वारा पढ़े जाने का शौक बन गया है। यथार्थ में कलावाद बाजारवाद बन गया है। वेशभूषा, भोजन, भवन सब बदल चुके हैं। पिज्जा भोजन हो गया है तो बर्गर नाश्ता। भाषा के माध्यम से बाजार को विकसित करने की भावना ने भाषा के शुद्ध सृजनशीलता को थोड़ा असुरक्षित कर दिया है।

भाषा की ऐसी गति बुद्धिजीवियों को कैसे शांत रख सकती है जबकि सृजन की हर साहित्यिक विधा भाषा की कसौटी पर ही कसी जाती है। इससे समाज का दिशा निर्देशन होता है। अभी तक दुनिया के जितने देश सुपर पावर हैं वह अपनी राष्ट्रभाषा में बड़े काम करते देखे जा सकते हैं। अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रांस, चीन, जापान जैसे सुपर पावर देश अपनी भाषा अंग्रेजी फ्रेंच और जापानी में ही चिंतन, खोज और काम करते समृद्धि हुए हैं। सिर्फ भारत में ही कल्पना की जाती है कि यह देश भारतीय बसाव और खास करके हिंदी को किनारे कर सुपर पावर देश बनेगा। इस पर कबीर की एक पंक्ति याद आती है कबीर कुत्ता राम का, मोतिया मेरा नाम, गले राम की जो बड़ी जीत खींचे तीत जाऊ। हम विदेशी और विजातीय भाषाओं की पूंछ पकड़ कर आगे बढ़ रहे हैं।

दरअसल हमारे यहां औपनिवेशिक हैंगओवर छाया हुआ है। इसकी एक वजह सांस्कृतिक आत्महीनता है। दूसरी कसर टेलीविजन पूरी कर देती है। इसमें ऐसी लोकप्रियता वादी चीजें ज्यादा दिखाई जाती हैं जिनके विज्ञापन से बाजार विकसित हो सके। फिर उसकी भाषा चाहे जो भी हो केवल माल बेचने और गांव कस्बों में नए बाजार बनाने के लिए हिंदी का जिस विधा के साथ प्रयोग हो रहा है, वह बाजार के उद्देश्य के लिए है। किसी आदर्श राष्ट्र निर्माण और बुनियादी परिवर्तन के लिए नहीं। भाषा की यह दुर्दशा केवल बाजार में नहीं राजनीति में भी है। साहित्य विचार दर्शन में भाषा जिस पवित्रता से जीती है वही राजनीति में अपनी शुचिता खो देती है। निराशा तब ज्यादा होती है जब भाषा को सभ्यता का प्रतिनिधि और आदर्श बनाने वाले लेखक, पत्रकार, साहित्यकार निशब्द और मुख बन जाते हैं मीडिया खुद हॉट न्यूज़ और ब्रेकिंग न्यूज़ के नाम पर टीवी टीआरपी बढ़ाती है फिल्मों में गाना की फूहड़ता भी अपने चरम पर है।

आज समय की मांग है कि हम अपने लोकतंत्र संस्कृति और भाषा की रक्षा कैसे कर सकते हैं भाषा में मूल्य और शुचिता को बढ़ाने की और हमारा कदम होना चाहिए।

आज की अंग्रेजी शिक्षा ने हमें निकम्मा और नकलची बना दिया है। कोई विदेशी भाषा हमारी संस्कृति और हमारे स्वरूप तथा भाव को व्यक्त करने की शक्ति नहीं रखती। -डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

अगर आज हिंदी राजभाषा मान ली गयी तो वह इसलिए नहीं कि वह किसी प्रांत विशेष की भाषा है, बल्कि इसलिए कि वह अपनी सरलता, व्यापकता तथा क्षमता के कारण सारे देश की भाषा है।

स्वामी विवेकानन्द



आंतरिक सौंदर्य

विमलेश कुमार

आवासीय लेखा परीक्षा अधिकारी, दुर्गापुर

मेरे पड़ोस में रहने वाले गुप्ता जी एक दिन अनायास ही टहलते हुए मेरे पास आ गए। वह अपनी छोटी सी एक दुकान चलाते हैं और इसी कारण वह ज्यादा व्यस्त रहते हैं एवं कहीं आना जाना कम ही करते हैं। इसी कारण उनके अचानक आने से मुझे थोड़ा आश्चर्य भी हुआ और मन में शंका भी हुई कि कहीं कोई समस्या तो नहीं।

मैंने पूछ लिया-“सब ठीक तो है।”

“हां, सब ठीक ही है।” यह कह कर वह खड़े हो गए।

मैंने उन्हें अंदर बैठने का आग्रह किया। साथ ही उनके चेहरे पर उनकी नजर डाली। ऐसा लगा जैसे वह मन ही मन किसी प्रश्न का उत्तर ढूंढ रहे हैं।

मैंने बात बढ़ाते हुए उनसे कहा “क्या बात है ? आप कुछ परेशान लग रहे हैं ?”

उनका उत्तर था “नहीं सर, ऐसी बात नहीं है। इधर कुछ दिनों से लावण्या मुझसे बात नहीं करती है।”

मैं थोड़ी देर अचंभित उनको देखता रहा। लावण्या बड़ी चुलबुली सुंदर और बड़ी प्यारी बच्ची है। वह कभी-कभार सामने आने पर मुझे भी नमस्ते अंकल बोल देती है। गुप्ता जी के घर में उनके अलावा बस लावण्या और उसकी माँ ही रहती है। इतने कम सदस्य वाले घर में कोई एक अगर मौन व्रत धारण कर ले तो समस्या तो होगी ही।

मैंने थोड़ा सोचते हुए उनसे पूछा “क्यों, ऐसी क्या बात हुई ?”

उन्होंने बताना शुरू किया “देखिए ना, एक दिन हम सब ने घूमने का प्लान बनाया। वह तैयार हो रही थी। वह बार-बार अपने कपड़े बदल रही थी। जब देर होने लगी तो मैं थोड़ा डांट दिया और कह दिया “तुम जिस बाहरी सुंदरता पर इतना ध्यान देती हो इसका कोई मोल नहीं। अगर ध्यान देना है तो अपनी आंतरिक सुंदरता पर ध्यान दो। अब क्या करें सर ? हम तो उसके भले के लिए कहा। किंतु उसे बुरा लग गया। तभी से वह मुझसे कटी कटी रहती है और बात भी नहीं करती है।”

अब तक माजरा मेरी समझ में आ गया था।

मैंने उसे कहा “चिंता मत कीजिए। सब ठीक हो जाएगा। मैं आपके घर पर कल शाम में चाय पीने आऊंगा और लावण्या को मैं समझा दूंगा।”

गुप्ता जी फिर अपने काम में निकल गए। दूसरे दिन मैं उनके यहां शाम को चाय पीने चला गया। गुप्ता जी बड़ी प्रसन्नता के साथ मुझे बैठाया और अपनी श्रीमती जी से चाय नाश्ता लाने को कहा।

मौका देखकर मैंने आवाज दी “लावण्या किधर है ?”

आवाज सुनते ही उसने बाहर निकल कर मुझे नमस्ते किया।

फिर मैंने उससे कहा “बैठो बेटा।”

मौका देख कर मैंने फिर लावण्या से कहा “बेटा पापा ने बताया कि तुम आजकल उनसे बात नहीं कर रही हो। उनसे नाराजगी का कारण ?”

उसने तपाक से उत्तर दिया “हां, मैं उनसे बात नहीं करूंगी। वह मुझे हमेशा डांटते रहते हैं।” “अच्छा ऐसी बात है।” मैंने ऐसा बोलते हुए फिर पूछा “उन्होंने क्या कहा ?”



“वह बोलते हैं कि सिर्फ आंतरिक सुंदरता पर ध्यान दो। बाहरी ताम-झाम सब बेकार है।” उसकी आवाज में नाराजगी साफ झलक रही थी।

तब संयत स्वर में मैंने उसे समझाया “बेटा, यह तो डांटना नहीं हुआ। वे तुम्हें वास्तव में डांट नहीं रहे थे बल्कि तुम्हें तो समझा रहे थे अर्थात् तुम्हारा सही मायनों में मार्गदर्शन कर रहे थे। तुमने सिर्फ सिर्फ शब्दार्थ पर ध्यान दिया, भावार्थ पर बिल्कुल ध्यान नहीं दिया। अगर तुम भावार्थ पर ध्यान देती तो उसे नाराज नहीं होती बल्कि तुम खुश होती कि घर ही में तुम्हें पिता के रूप में एक उत्कृष्ट सलाहकार और मार्गदर्शक प्राप्त है।”

यह सब सुनकर लावण्या विचारमग्न हो गई। फिर कुछ क्षण रुककर बोली “वो कैसे अंकल?”

अब उसको समझाना मेरा काम था। मैंने शुरू किया “देखो, हमें अपने आंतरिक सौंदर्य के विकास और संरक्षण पर ध्यान देने की जरूरत है क्योंकि यह हमारे चरित्र को स्थाई रूप से निखारता है जबकि बाह्य सौंदर्य अस्थायी होता है। उदाहरण के रूप में, अगर तुमने अपने अंदर किसी खास गुण का विकास किया जैसे कि संगीत साधना, लेखन कला आदि तो वह तुम्हें बाकी लोगों से बिल्कुल अलग बना देती हैं। तुम्हारा सम्मान भी बढ़ जाता है और यह गुण तुमसे कोई छीन भी नहीं सकता ना ही चुरा सकता है। जैसे किसी प्रतिष्ठित डॉक्टर अथवा इंजीनियर का गुण उससे अलग नहीं किया जा सकता। यही उसकी आंतरिक सुंदरता हुई। ये गुण बाजार में कितना भी धन खर्च करके प्राप्त नहीं किये जा सकते हैं। दूसरी तरफ बाह्य सुंदरता की तमाम वस्तुएं बाजार से मूल्य चुकाकर प्राप्त की जा सकती हैं जैसे कि- महंगे से महंगा गहना, साड़ी, कपड़े इत्यादि।” गहमेरी बात को लावण्या बड़े ध्यान से एक अच्छे विद्यार्थी की तरह सुन रही थी। मुझे लगा कि आज के लिए इतना काफी है।

मैंने उससे पूछा “अब बताओ, तुम्हारे पापा ने तुम्हें डाँटा या मार्गदर्शन किया?”

अब उसके मन का विकार जा चुका था। वह प्रसन्न मुद्रा में बोली-“हां अंकल, मुझे पापा की बात समझ में आ गई और अब मैं उनसे गुस्सा भा नहीं हूँ। वैसे भी वो मुझसे बहुत प्यार करते हैं, मेरा पूरा ध्यान भी रखते हैं।” यह सब बातें समझाने के लिए उसने बार-बार मुझे धन्यवाद कहा और अंदर चली गई।

गुप्ता जी के घर का चाय नाश्ता भी पूरा हो चुका था। मैं भी गुप्ता जी और उनकी श्रीमती जी को धन्यवाद करते हुए उठ गया। वे दोनों पति पत्नी भी उठकर दरवाजे तक मुझे छोड़ने आए और बार-बार धन्यवाद प्रकट कर रहे थे।

जैसे इंद्र-धनुष में भिन्न-भिन्न रंग होते हैं वैसे ही हिन्दुस्तान में भिन्न-भिन्न भाषाएँ हैं। भारत के लोगों को दो-तान भाषाओं का ज्ञान तो होना ही चाहिए। उससे खूब ज्ञान मिलेगा, बुद्धि व्यापक होगी, एक दूसरे की भाषा सीखने से प्रेम बढ़ेगा, व्यवहार सुलभ होगा और हिन्दुस्तान की ताकत बढ़ेगी।

-आचार्य विनोवा भावे

परिस्थितियाँ मनुष्य को कहाँ से कहाँ तक पहुंचा देती हैं-इसमें कोई संशय या आश्चर्य की बात नहीं है। सबसे बढ़कर व्यक्ति का अपना सिद्धांत या विचार होता है जिसके सहारे वह संघर्ष के पथ पर निरन्तर अग्रसर होता है। व्यक्ति का आदर्श इसी में निहित है कि वह सदा अपने कर्तव्य के प्रति उन्मुख रहे।

-जयशंकर प्रसाद



मैं किसान हूँ

राधेश्याम यादव

पुत्र कौशल किशोर यादव

वरिष्ठ लेखा परिक्षक

रिपोर्ट अनुभाग

मैं किसान हूँ।

बंजर सी धरती से सोना उगाने का हौसला रखता हूँ,
पर अपने हक की लड़ाई लड़ने से डरता हूँ,
ये सूखा, ये रेगिस्तान, सुखी फसल को देखता हूँ,
ना दिखता कोई रास्ता, तभी आत्महत्या करता हूँ।
उड़ाते हैं मखौल मेरा ये सरकारी कामकाज,
बन के रह गया हूँ राजनीति का मोहरा आज।
क्या मध्य प्रदेश, क्या महाराष्ट्र, झारखंड से लेकर सौराष्ट्र,
मरते हुए अन्नदाता की कहानी बनता, मैं किसान हूँ।

साल भर करूँ मैं मेहनत, उगाता हूँ दाना,
ऐसी कमाई क्या जो बिकता बारह रुपये और मिलता चार आना।
ना माफ कर सकूंगा, वो संगठन वो दल,
राजनीति चमकाते बस अपनी, यहां बर्बाद होती फसल।
डूबा हूँ कर्ज में, क्या ब्याज क्या असल,
उन्हें खिलाने को उगाया दाना, पर हो गया अपनी ही जमीन से बेदखल।
बहुत गीत बने, बहुत लेख छपे कि मैं महान हूँ,
पर दुर्दशा ना देखी मेरी किसी ने, ऐसा मैं किसान हूँ।



लहराती फसलों वाले खेत अब सिर्फ सिनेमा में होते हैं,
असलियत तो यह है कि हम खुद ही एक एक दाने को रोते हैं।
आधुनिक युग ने भुला दिया मुझे मैं बस एक छूटे हुए सुर की तान हूँ।
बचा सको तो बचा लो मुझे ऐ राष्ट्रभक्त, मैं किसान हूँ।





इंसान बनो

रोहित साव

लेखा परीक्षक
डीवीसी मुख्यालय

ना मुसलमान खतरे में है ,ना हिंदू खतरे में है
धर्म और मजहब से बंटता इंसान खतरे में है
ना राम खतरे में है ना रहमान खतरे में है
सियासत की भेंट चढ़ता भाईचारा खतरे में है।

ना कुरान खतरे में है ,ना गीता खतरे में है
नफरत की दलीलों से इन किताबों का ज्ञान खतरे में है
ना मस्जिद खतरे में है ना मंदिर खतरे में है
सत्ता की लालची हाथों इन दीवारों की बुनियाद खतरे में है।

ना ईद खतरे में है, न दीवाली खतरे में है
गैर मुल्क की नजर लगी है, हमारा सद्भाव खतरे में है
धर्म और मजहब का चश्मा उतार कर देखो दोस्तों
अब तो हमारा हिंदुस्तान खतरे में है।

एक बनो, नेक बनो ,ना हिंदू बनो, ना मुसलमान बनो ,
अरे पहले ढंग से इंसान बनो।

“जाने क्यों आज चिरागों में रोशनी कम है,
देखो आसमां के तारे भी कहीं गुम है,
कड़कती बिजली,कितना सर्द मौसम है,
घिरते अंधेरों में कितने अकेले से हम है।”

संसार में दूसरों के मत से अपनी धारणा बनाना सरल है। स्वयं अपनी धारणा लिए हुए एकाकी रहना भी सरल है,परन्तु महान पुरूष वही हैं जो भीड़ में रहकर भी मधुर मुस्कान लिए हुए अपनी स्वतन्त्र एकाकी धारणा बनाए रखता है। - एमर्सन

“पिपासा तृप्त होने की चीज नहीं है। आग को पानी की आवश्यकता नहीं होती,उसे घृत की आवश्यकता होती है जिससे वह और भड़के।”
-भगवती चरण वर्मा

जो भावना मुखरित नहीं हुई,जो अनुभूति के स्तर पर केवल मन ही मन,अन्दर ही अन्दर रचती रही जिस रागिनी को किसी ने न तो सुना,न गाया-वह अपने शुद्ध रूप में परा के स्तर पर कितनी महान होती है उसकी अनुगूँज कितनी मधुर होती है-इसे केवल विरह विदग्ध ही जानता है।

-डॉ.विद्यनिवास मिश्र

निन्दा करने वाला और निन्दा सुनने वाला दोनों समान रूप से निकृष्ट मनोवृत्ति के होते हैं।.....कालिदास आलस्य वह रोग है,जिसका रोगी कभी नहीं संभलता।.....प्रेमचन्द उत्साही के लिए लोकों में कुछ भी दुर्लभ नहीं।.....वाल्मीकि रामायण श्रेष्ठ जन जैसा आचरण करते हैं वैसा ही दूसरे लोग करते हैं।.....श्रीमदभागवत गीता



जिंदगी

नूपुर साव
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक
प्रशासन अनुभाग

कभी आशा तो कभी निराशा है जिंदगी,
संघर्ष का दूसरा नाम है जिंदगी।
कभी सुख तो कभी दुख है जिंदगी,
ख्वाहिशों से भरी अरमान है जिंदगी।

कभी जीत तो कभी हार है जिंदगी,
हर मोड़ पर मिलने वाली इम्तिहान है जिंदगी।
कभी प्रकाश तो कभी अंधकार है जिंदगी,
आंसूओ और मुस्कान की लड़ी है जिंदगी।

कभी प्रेम तो कभी घृणा है जिंदगी,
हर पल बदलने वाली एहसास है जिंदगी।
कभी आम सी मीठी तो कभी इमली सी खट्टी है जिंदगी,
हर हालत में निरंतर बहने वाली नदी है जिंदगी।

कभी पहचानी तो कभी अनजान है जिंदगी,
नये नये अनुभव कराने वाली कहानी है जिंदगी
कभी पहेली तो कभी सहेली है जिंदगी,
समय के साथ चलने वाली संस्कृति है जिंदगी।

कभी भीड़ तो कभी अकेली है जिंदगी,
हर परिस्थिति से लड़ने वाली प्रेरणा है जिंदगी।
तो तुम यूँ ही न गवाओ अपनी ये जिंदगी,
उठो चलो औरबनाओ अपनी प्यारी सी एक जिंदगी।





तीन ऋतुएँ

अनिल मांझी

सहायक लेखा परीक्षा अधिकारी

फैलता प्रदूषण, चित्त के परिवेश
काम, क्रोध, उत्तेजना, और नियंत्रित आवेश
असह्य, संवेदनहीन, विकृत होता मति
बढ़ते वारदात, अनैतिकता, असुरावृत्ति
अमन, स्नेह, मर्यादा, खुशहाली नदारद
विलुप्त होते वसंत, हेमंत और शरद।

जल उठता आग, तन में, मन में,
खौलता खून, चिलचिलाती आंतरिक “गर्मी” से
निर्बल, निष्पाप, निहत्थे को मार काट देता बलशाली
निगलने की होड़-जैसे छोटी-बड़ी मछली
बेखौफ, आजाद, घूमता रहता, फंसते सिर्फ एक आध
जलता रहता आग, फिर भी खाक ना होता अपराध।

कहीं मूसलाधार, कहीं छींटे टपकती
बेमौसम “वर्षा”, तर-बतरधरती,
बहते लहू से मिटते, मिटाते प्यास
कलंक, आत्मग्लानी का अकिंचित अहसास
उफनती वैमनस्य, प्रतिशोध की लहरें
रक्तरंजित वसुधा, जो थे हरे भरे।

लूट में लिपटे क्रंदन करते आश्रित
वियोग में, तकदीर को कोसते शोषित
अपने-अपनों की जान, सुरक्षा का डर
विपदा की संशय में, सर्वथा काँपता थर-थर
दुबके, छिपते-फिरते, टालने की अनहोनी
बिना कंपकंपाती “शीत” के ठिठुरता प्राणी।



दो शब्द

आज की अंग्रेजी शिक्षा ने हमें निकम्मा और
नकलची बना दिया है। कोई विदेशी भाषा हमारी
संस्कृति और हमारे स्वरूप तथा भाव को व्यक्त
करने की शक्ति नहीं रखती।-बाबा साहेब
डा. भीमराव अम्बेडकर



कर्ज

जितेंद्र कुमार

डी.ई.ओ., चंद्रपुरा

सोमेश आज उच्च पद पर पदस्थापित था। एक समय ऐसा भी था, जब वह एक कच्चे घर में रहा करता था। उसकी मां ने दूसरे घरों में काम कर उसे इस लायक बना दिया था कि उसे किसी भी चीज की कमी नहीं थी। सोमेश बहुत अच्छे व्यक्तित्व का मालिक था, जो भी देखता वह कहता कि हर किसी का बेटा ऐसा ही हो। दूसरों का भला करने वाला और आज्ञाकारी बेटा।

एक दिन वह घर पर ही टेलीविजन देख रहा था, जिसमें नायक कह रहा था “मां का कर्ज कोई नहीं चुका सकता”। अचानक ना जाने उसे क्या सुझता है और वह मां को कहता है “मां मैं तेरा कर्ज चुकाऊंगा”। “रहने दे बेटा” मां ने कहा। पर सोमेश अपनी जिद पर कायम रहता है। वह कहता है “मां, मैं आपका कर्ज किस तरह उतारूँ?” मां कहती है “तू कुछ रातों मेरे ही साथ सोना।” सोमेश खुश हो जाता है।

सोमेश अपनी मां के साथ नींद में सो जाता है। तभी आधी रात को मां जगा कर कहती है “बेटा, पानी पिला।” सोमेश अनमने ढंग से पानी लाकर देता है। मां एक घूंट पानी पीकर सारा पानी बिस्तर पर गिरा देती है। सोमेश पूछता है “मां, पानी कैसे गिर गया?” “बेटा, माफ करना गलती से गिर गया।” मां ने कहा। कुछ देर बाद फिर जगा कर सोमेश से पानी मांगती है और फिर एक घूंट पीकर बचा पानी गिरा देती है। सोमेश झल्ला जाता है, तो फिर कहती है “बेटा, गलती से गिर गया”। सोमेश फिर सो जाता है। मां फिर सोमेश को जगा कर अपनी पानी मांगती है तो सोमेश गुस्से में आ जाता है और पानी देकर कहता है, “जितना पानी पीना है पी लो, आप बार-बार पानी मांगकर नींद क्यों खराब कर रही हो?” मां मुस्कुरा कर कहती है “बेटा, तुझे एक रात की नींद की चिंता है। मैंने ना जाने कितनी रातें जागकर बिताई है। तुझे सूखे में सुला कर खुद गीले में सोती थी। तू मेरा कर्ज क्या चुकाएगा?”

सोमेश को मां की बात सुनकर अपनी गलती का एहसास हो जाता है वह समझ जाता है कि मां का कर्ज नहीं चुकाया सकता। ना सिर्फ मां, बल्कि पिता-भाई के प्यार से किए गए काम का भी कर्ज नहीं चुका सकता। वह मां से माफी मांग कर उसके गले लग जाता है।





आज के दौर में

धीरज कुमार राय

कनिष्ठ अनुवादक

अनिश्चय की इस दौड़ में
हत्यारे और नफीस होते जा रहे हैं
अब तो मारी जाने वाला मनुष्य होने की दुहाई भी नहीं दे सकता
मनुष्य ही मौजूद है
बढ़ती तादाद में
बेतरतीब अपनी मनुष्यता मिटाने को
फर्ज निभाने को
पड़े हुए हैं उस फसाद के पीछे जिसकी कोई जड़ नहीं
कभी मैं आगे बढ़ता हूँ कभी वे पीछे छूट जाते हैं
लेकिन ना वे मुझे छोड़ते हैं ना ही मैं उनसे पीछा छुड़ा पाता हूँ
उन्हीं के रिश्तो से मैं खुद को जुड़ा हुआ पाता
मैं कुछ और कहना चाहता हूँ
वह कुछ और समझ जाते हैं
मैं तरासना चाहता हूँ
वे बार बार धोखा दे जाते हैं
बहुत बार कहा मैंने उनसे मेरे दिमाग को घोसला मत बनाओ
कहीं और जाकर डेरा जमा लो
अब मुझे किसी चीज में दिलचस्पी नहीं रह गई है
ना दुनिया में, ना उसके मूर्खतापूर्ण कारोबार में
मैं सिर्फ एक सरल सीधी सादी जिंदगी जीना चाहता हूँ
ऐसी जिंदगी के आज के दौर में बहुत कठिन है,
ऊब गया हूँ मैं शब्दों से, नाता टूट चुका है मेरा
यह कैसा समय है
जब बड़े से बड़े सच के बारे में बड़े से बड़ा झूठ बोलना संभव है।
वे शब्द उछलते हैं
वे स्वांग रचते हैं
और हम अपनी निष्ठा ईमानदारी और सच्चाई खो देते हैं।
और फिर मोमबत्ती की तरह मेरी संवेदनशीलता पिघलती जाती है।
उजाड़ हो चुके हैं बगीचे
रिक्त हो गया है समय
मौन हो चुकी है हमारी शक्ति
और हम खुद को नष्ट करने के खतरे में हैं।
शायद अब मैं तुम्हें नहीं कर पाऊंगा प्यार
यह मुझे एक नई सभ्यता की शुरुआत लगती है।



खामोशी

रोहित साव
डीवीसी मुख्यालय
लेखा परीक्षक

सुनो यू चुप से ना रहा करो
यू खामोश से हो जाते हो
तो दिल को वहम सा हो जाता है
कहीं खफा तो नहीं हो?
कहीं उदास तो नहीं हो?

तुम बोलते अच्छे लगते हो
तुम लड़ते अच्छे लगते हो
कभी शराब से, कभी गुस्से से,
तुम हंसते अच्छे लगते हो,
सुनो यू चुप से ना रहा करो।

जब मैं निराश होता हूँ, मैं याद कर लेता हूँ कि समस्त इतिहास के दौरान सत्य और प्रेम के मार्ग की ही हमेशा विजय होती है। कितने ही तानाशाह और हत्यारे हुए हैं, और कुछ समय के लिए वह अजय लग सकते हैं, लेकिन अंत में उनका पतन होता है। इस बारे में सोचो हमेशा। - महात्मा गांधी

यह चर्चा आम होने दो



अंकित कुमार मल्लिक

तुम्हारे लब जो सुनने में सुबह से शाम होने दो
मैं तुमसे प्यार करता हूँ यह चर्चा आम होने दो
कहर क्या खूब ढाती है तुम्हारी मुस्कुराहट भी
अगर मर जाऊँ मैं इन पर यही अंजाम होने दो
दो पल साथ देखा बस तो क्यों जलते हो शहर वालों
अभी तो खोया हूँ मैं बस अभी गुमनाम होने दो
मेरे नाम में शामिल तुम्हारा नाम होने दो
मैं तुमसे प्यार करता हूँ यह चर्चा आम होने दो

हमें जो यह मानव शरीर मिला है यह ईश्वर की कृपया का फल है। मानव योनि बहुत भाग्यवान लोगों को मिलती है। तुलसी के अनुसार मनुष्य को चाहिए कि मनुष्य का शरीर पाकर इन्दिय लिप्सा में न पड़ा रहे बल्कि सदाचरण की ओर प्रवृत्त हो। ऐसे मनुष्य का जीवन धिक्कार है जो मनुष्य का शरीर पाकर भी दूसरे मनुष्यों को पीड़ा और कष्ट पहुंचाता है।

- गोस्वामी तुलसीदास



बहादुरशाह जफर का अंतिम सफर

नरेंद्र कुमार

सहायक लेखा परीक्षा अधिकारी, प्रशासन

बहादुरशाह जफर (1775-1862) भारत में मुगल साम्राज्य के आखिरी शहंशाह थे और उर्दु के जाने माने शायर थे। उन्होंने 1857 में प्रथम भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में भारतीय सिपाहियों का नेतृत्व किया था।

भारत के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के लिए बहादुरशाह जफर को भारी कीमत चुकानी पड़ी थी। शुरूआती परिणाम हिंदुस्तानी योद्धा के पक्ष में रहे लेकिन अंग्रेजों ने छल-कपट के बल पर स्वतंत्रता संग्राम को दबा दिया था। बहादुरशाह जफर ने अंग्रेजों से बचने के लिए हुमायूँ के मकबरे में शरण ली थी।

जब मेजर हडसन मुगल सम्राट को गिरफ्तार करने के लिए हुमायूँ के मकबरे में पहुँचा, जहाँ पर बहादुरशाह जफर अपने दो बेटों के साथ छुपे हुए थे, तो उसने (मेजर हडसन) जो स्वयं उर्दू का थोड़ा ज्ञान रखता था, कहा-

**दमदमें में दम नहीं है, खैर मांगो जान की
ऐ जफर ठंडी हुई, अब तेग हिंदुस्तान की।**

इस पर बहादुरशाह जफर ने उत्तर दिया-

**हिंदियों में बू रहेगी, जब तलक ईमान की
तख्त ए लंदन चलेगी, तेग हिंदुस्तान की।**

तत्पश्चात् मेजर हडसन ने उन्हें, उनके बेटे मिर्जा मुगल और खिजर सुल्तान व पोते अबू बकर के साथ पकड़ लिया। उनके पुत्रों और पौत्रों को ब्रिटिश अधिकारियों ने सरेआम गोलियों से भून डाला। इसके बाद अंग्रेजों ने बगावत को पूरी तरह खत्म करने के लिए उन्हें देश से निर्वासित कर रंगून (अब म्यांमार) भेज दिया।

अंग्रेजों ने जुल्म की सभी हदें पार कर दी थी। जब जेल में बहादुरशाह को भूख लगी तो अंग्रेजों ने उनके सामने थाली में परोसकर उनके बेटों के सिर ले आए। ऐसा व्यवहार देखकर उन्होंने अंग्रेजों को जबाब दिया कि हिंदुस्तान के बेटे देश के लिए अपने सिर को कुर्बान करके अपने पिता के पास इसी अंदाज में आया करते हैं।

7 नवंबर 1862 को सुबह 5 बजे थे। गले में लकवे की मार के चलते 82 साल के जफर दो दिन से कुछ भी नहीं खा पी रहे थे। अधखुली आखों से रंगून की जेल की कोठरी के दीवारों पर नजर डाली, कुछ भी पढ़ा नहीं जा रहा था। उन्हें सब याद आ गया और अफसोस हुआ कि वह यँ ही मर जाने के लिए क्यों पैदा हुआ है। 7 नवंबर 1862, ठीक उसी दिन को एक बंदी के रूप में उन्होंने दम तोड़ दिया। उन्हें रंगून में श्वेडागोन पैगोड़ा के नजदीक दफनाया गया। इस जगह को बहादुरशाह जफर दरगाह के नाम से आज भी जाना जाता है।

बहादुरशाह जफर अपनी मौत हिंदुस्तान में ही चाहते थे। इसके लिए उन्होंने दिल्ली के महारौली में कुतुबुद्दीन बख्तियार की दरगाह के पास के स्थान का चयन कर अपने लिए दो गज जमीन की भी निशान देही कर रखी थी। परंतु रंगून में उनकी मृत्यु हो जाने के कारण उनकी यह ईच्छा अधूरी ही रह गई।

बहादुरशाह जफर उर्दू के जाने माने शायर थे। उनके कलम की एक बानगी कुछ इस प्रकार है-

लगता नहीं है दिल मेरा उजड़े दयार में, किस की बनी है आलम-ए-ना-पाएदार में।

कह दो इन हसरतों से कहीं और जा बसें, इतनी जगह कहाँ है दिल-ए-दाग-दार में।

काँटों को मत निकाल चमन से ओ बागवाँ, ये भी गुलों के साथ पलें हैं बहार में।

बुलबुल को बागवाँ से न सख्ताद से गिला, किस्मत में कैद लिखी थी फसल-ए-बहार में।

उम्र-ए-दराज माँग कर लाए थे चार दिन, दो आरजू में कट गए दो इंतजार में।

दिन जिंदगी के खत्म हुए शाम हो गई, फैला के पाँव सोयेंगे कुंजे मजार में।

कितना है बदनसीब जफर दफन के लिए, दो गज जमीन भी न मिली कू-ए-यार में।



कुछ उर्दू शब्दों के अर्थ-

दयार - स्थान, जगह। **आलमें** - **नापाइदार** - नश्वर दुनिया। **हसरत** - मनोकामना।

बागवाँ - माली। **दिल - ए - दागदार** - हृदय का दाग। **सैय्याद** - शिकारी। **गुल** - फूल

फस्ल - ए - बहार - बसंत ऋतु। **दराज** - लंबी। **कूं-ए-यार** - प्रेमिका की गली। **आरजू** - चाहत

चमन - छोटा बागीचा। **दमदमें** - मोर्चा, चारदीवारी। **बू** - खूशबू, महक। **तेग** - तलवार

तख्त - राजसिंहासन। **कूंजे - मजार** - कब्र का कोना।





धर्म बनाम वैज्ञानिक सोच

धीरज कुमार राय

कनिष्ठ अनुवादक, प्रशा.

इसमें कोई संदेह नहीं कि संसार में पाई जाने वाली सभी प्रजातियों में मनुष्य सबसे बुद्धिमान प्राणी माना जाता है। पर क्या सचमुच ऐसा है? मेरे मन में यह प्रश्न इसलिए उठ रहा है कि हमने आज तक किसी जानवर, पक्षी या दूसरे जीव को अपनी जरूरत पूरा करने के लिए किसी पत्थर पर माथा टेकते नहीं देखा। यह काम तो मनुष्य जैसा बुद्धिमान या तार्किक सोच रखने वाला प्राणी ही कर सकता है। वास्तव में मनुष्य के अलावा कोई अन्य प्राणी आस्था जैसी काल्पनिक चीज में कभी उलझता ही नहीं है ना ही उसे उलझने की जरूरत महसूस होती है।

दरअसल मानव जाति के इतिहास में आज तक युद्ध, भूकंप, बाढ़, सुनामी आदि से उतने लोग नहीं मरे जितने धर्म और ईश्वर के नाम पर मरे और मारे गए। फिर भी हम इस तरह के जुमले अक्सर सुनते हैं कि 'धर्म इंसान को अच्छा बनाता है।' 'आतंकवाद का कोई धर्म नहीं होता है।' या फिर 'मजहब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना' आदि। जबकि वास्तविकता यह है कि मनुष्य समाज में धर्म सबसे ज्यादा नफरत और लोगों के बीच दूरी बढ़ाता है। जहां तक नैतिक मूल्यों का प्रश्न है, एक नास्तिक होने के नाते मैं यह कह सकता हूं कि धर्म का नैतिकता से कोई संबंध नहीं है।

हालांकि मेरे विचार से स्वर्ग नरक की पारलौकिक धारणा और भगवान एक कल्पना और भ्रम से ज्यादा कुछ नहीं है। कई बार ऐसा लगता है कि देश में फैले भ्रष्टाचार के पीछे कहीं हमारी दान दक्षिणा और चढ़ावे के संस्कृति ही तो जिम्मेदार नहीं है? जहां बहुत कम उम्र से ही किसी बच्चे को और फिर बड़ा होने के बाद भी लगातार लोगों को यह बताया सिखाया जाता रहा हो कि गंगा में एक डुबकी मारने से सारे पाप धुल जाते हैं वहां भला कोई पाप करने में क्यों संकोच करेगा। अपने चारों तरफ हम नजर डाले, धर्म की व्यवस्था के तहत जितनी भी मान्यताएं हैं, उनके आलोक में सामाजिक आचरण की नैतिकता की हकीकत हमें समझ में आ जाएगी। अब समय आ गया है कि हम अपने आने वाली पीढ़ियों के दिमाग में जन्म से ही धर्म का जहर नहीं भरे।

नई पीढ़ियों को अपना स्वतंत्र और वैज्ञानिक सोच विकसित करने के लिए प्रेरित करें और उन्हें खुद यह तय करने दें कि वह धर्म या ईश्वर में विश्वास करता है कि नहीं। पैदा होने के बाद से ही हमें धर्म संबंधी मान्यताओं और नैतिकता के आचरण में ही सोचने विचारने के ढांचे विकसित किए जाते हैं। इसे निजी आस्था स्वतंत्र या वैज्ञानिक सोच का नाम नहीं दिया जा सकता। मानव सभ्यता के विकास की बुनियाद वैज्ञानिक सोच है और यही हमें आगे लेकर जा सकता है।

शिक्षा जब पराई भाषा में दी जाती है, तब केवल शब्दों को याद रखने का बोझ ही विद्यार्थी के दिमाग पर नहीं पड़ता, बल्कि विषय को समझने में भी उसे बड़ी कठिनाई होती है। यह स्पष्ट है कि जहां रटने की शक्ति बढ़ती है, वहां समझने की शक्ति मंद पड़ जाती है। -सरदार बल्लभ भाई पटेल

भाइयों! अब तो नींद से चौंको! अपने देश की सब प्रकार से उन्नति करो, जिससे तुम्हारी भलाई हो। वैसा ही किताब पढ़ो, वैसा ही खेल खेलो, वैसा ही बात-चीत करो। परदेशी वस्तु और परदेशी भाषा का भरोसा मत रखो, अपने देश में अपनी ही भाषा में उन्नति करो। -भारतेन्दु हरिश्चन्द्र



हिंदी पखवाड़ा-2018 का समापन समारोह





श्रेया पाण्डेय सुपुत्री श्री नरेंद्र कुमार, सहायक लेखा परीक्षा परीक्षा अधिकारी



त्रिनव पाण्डेय सुपुत्र श्री नरेंद्र कुमार, सहायक लेखा परीक्षा परीक्षा अधिकारी